7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 डीडीयू में बनेगा गुरू गोरक्षनाथ शोधपीठ

5 2006 में भी पेपर लीक में आया था बेदीराम का नाम गैंगस्टर की हुई थी कार्रवाई, विधायक ने दी ये सफाई

8 उमड़ा जनसैलाब

UPHIN51019 | वर्षः 02, अंकः 02 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 08 जुलाई, 2024

नहीं रहे प्रो. शिवाजी सिंह

सीएम योगी ने कहा, इनका निधन राष्ट्र एवं समाज के लिए अपूरणीय क्षति

गोरखपुर। प्रो शिवाजी सिंह के निधन पर सीएम योगी ने शोक जताते हुए दुख व्यक्त किया है। परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि शिवाजी सिंह ने अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के तहत राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में भारतीय इतिहास लेखन को भारत केंद्रीय दिशा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. शिवाजी सिंह का असामयिक निधन हो गया। इनके निधन पर सीएम योगी ने शोक जताते हुए दुख व्यक्त किया है। परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि शिवाजी सिंह ने अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के तहत राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में भारतीय इतिहास लेखन को भारत केंद्रीय दिशा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इनका निधन राष्ट्र एवं समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग में भी एक शोक सभा आयोजित की गई थी। प्रो. राजवंत राव ने कहा कि प्रो. शिवाजी सिंह का निधन न सिर्फ उनके परिवार बल्कि सम्पूर्ण अकादमिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। वह एक प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता और अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वान थे।

प्रो. शिवाजी सिंह का निधन गुरुवार की सुबह 9:30 बजे के करीब ह्रदय गति रुक जाने के चलते हो गया। शोक सभा में उन्हें याद करते हुए प्रो.राजवंत राव ने कहा कि प्रो. शिवाजी सिंह एथेन्स में रिसर्च फेलो रहे। उन्होंने आचार्य राजबली पांडेय के निर्देशन में मनुस्मृति पर शोध कार्य किया था। वह इतिहास के अध्ययन की पूर्णता के लिए साहित्य और पुरातत्व दोनों का अध्ययन आवश्यक मानते थे। वह गहरी अकादमिक रुचि और अदभुत प्रतिभा के धनी थे। संस्कृति, साहित्य और पुरातत्व पर उनका समान अधिकार था। न्यू आर्कियोलॉजी में उनकी विशेषता थी।

गोरखपुर में पानी ही पानी

गोरखपुर में मानसून बनी आफत, सिस्टम फेल– बारिश में गलियां हुईं लबालब, राहगीरों को परेशानी

लगातार हो रही बारिश के बाद शहर की कई गलियों में पानी भर गया। दो दिनों में करीब 150 एमएम से ज्यादा बारिश हो चुकी है।

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर । जलभराव की वजह से लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी। इधर सुबह से ही नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल समेत सभी अपर नगर आयुक्त, मुख्य अभियंता एवं जोनल अधिकारी, अवर अभियंता जलभराव वाले क्षेत्रों में ही डटे रहे। बारिश रुकने के बाद पानी निकल गया, लेकिन बुधवार को दिनभर बारिश होती रही। मुंशी प्रेमचंद पार्क, विजय चौक, धर्मशाला बाजार, मेडिकल कॉलेज रोड पर भेडियागढ़, विष्णुपुरम कॉलोनी, ओमनगर, बशारतपुर, अशोकनगर, स्पोर्ट्स कॉलेज रोड के किनारे गणेशपुरम, गायत्रीपुरम, हरिद्वारपुरम, रामजानकी नगर कॉलोनी में जलभराव ज्यादा रहा। गोपलापुर, दाउदपुर, रुस्तमपुर, रेती रोड में भी कई जगह सड़कों पर पानी भर गया। पानी निकालने के लिए नगर

निगम को 31 स्थानों पर स्थाई पंप और 30 स्थानों पर अस्थाई पंप संचालित करने पड़े।

सुभाष चंद्र बोसनगर के ग्रीन सिटी एरिया में पिछले बार की अपेक्षा लोगों ने काफी राहत महसूस की। ऐसी ही राहत बसियाडीह नाला क्षेत्र से होकर गुरजने वाली कॉलोनियों की भी रही। मुख्य अभियंता संजय चौहान ने इन क्षेत्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान क्षतिग्रस्त सड़क के गड्ढों में पानी भरा मिला। पैडलेगंज–रुस्तमपुर सिक्सलेन पर लोक निर्माण विभाग की ओर से बनाए गए नाला–क्रॉस पर नाले की दीवार टूट कर गिर गई थी। इस कारण रुस्तमपुर, दाउदपुर, गोपलापुर मलिन बस्ती, इंदिरानगर, गोपलापुर, पूर्वी दाउदपुर और गोपलापुर के पीछे गोरखपुर विकास प्राधिकरण की कॉलोनियों की जलनिकासी बाधित हो गई। सूचना मिलते ही नगर निगम की क्यूआरटी टीम पहुंची। नाला में गिरे मलबे को निकालकर जलनिकासी की व्यवस्था दुरुस्त कराई।

गरीबों को 'भोले बाबा' जैसे बाबाओं के अंधविश्वास के बहकावे में न आना चाहिए, मायावती का बड़ा बयान

लखनऊ। हाथरस में सत्संग के बाद मची भगदड़ मामले में बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने दोषियों पर सख्त कार्रवाई की अपील भी की है। हाथरस के सिकंदराराऊ में हुई भगदड़ मामले में बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने प्रतिक्रिया दी है। मायावती ने "भोले बाबा जैसे अनेकों और बाबाओं के अन्धविश्वास व पाखंडवाद के बहकावे में आकर अपने दुख व पीड़ा को और नहीं बढ़ाने की सलाह दी है।

मायावती ने भगदड़ में 121 लोगों की मौत को अति–चिंताजनक बताया है। उन्होंने बाबा भोले सहित अन्य जो भी दोषी हैं, उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की अपील भी की है। शनिवार को मायावती ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया कि "देश में गरीबों, दलितों व पीड़ितों आदि को अपनी गरीबी व अन्य सभी दुखों को दूर करने के लिए हाथरस के भोले बाबा जैसे अनेकों और बाबाओं के अन्धविश्वास व पाखंडवाद के बहकावे में आकर अपने दुख व पीड़ा को और नहीं बढ़ाना चाहिए", यही सलाह। उन्होंने आगे लिखा कि बल्कि बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के बताए हुए रास्तों पर चलकर इन्हें सत्ता खुद अपने हाथों में लेकर अपनी तकदीर खुद बदलनी होगी अर्थात् इन्हें अपनी पार्टी बीएसपी से ही जुड़ना होगा, तभी ये लोग हाथरस जैसे कांडों से बच सकते हैं जिसमें 121 लोगों की हुई मृत्यु अति–चिंताजनक।

मायावती ने लिखा कि हाथरस कांड में, बाबा भोले सहित अन्य जो भी दोषी हैं, उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। ऐसे अन्य और बाबाओं के विरुद्ध भी कार्रवाई होनी जरूरी। इस मामले में सरकार को अपने राजनैतिक स्वार्थ में ढीला नहीं पड़ना चाहिए ताकि आगे लोगों को अपनी जान ना गवांनी पड़े।

'अबकी बार 400 पार हो गया...

शशि थरूर ने ब्रिटेन आम चुनाव के नतीजों के जरिए बीजेपी पर कसा तंज

ब्रिटेन के आम चुनाव नतीजों पर कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने प्रतिक्रिया दी है। हालांकि उन्होंने ब्रिटिश चुनाव पर टिप्पणी करते हुए मोदी सरकार और भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्श हैंडल पर लिखाआखिरकार "अब की बार 400 पार" हुआ – लेकिन दूसरे देश में! लेबर पार्टी की जीत के साथ ही किएर स्टार्मर ब्रिटेन के अगले प्रधानमंत्री बन गए हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटेन आम चुनाव में लेबर पार्टी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर ली है। 14 सालों के बाद एक बार फिर लेबर पार्टी ने सत्ता में वापसी कर ली है। 650 सीटों में 648 सीटों पर नतीजे सामने आए। लेबर पार्टी को 412 सीटें मिली। वहीं, कंजरवेटिव को 121 सीटें प्राप्त हुई।

शशि थरूर ने भाजपा पर कसा तंज

ब्रिटेन के आम चुनाव नतीजों पर कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने प्रतिक्रिया दी है। हालांकि, उन्होंने ब्रिटिश चुनाव पर टिप्पणी करते हुए मोदी सरकार और भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्श हैंडल पर लिखा,"आखिरकार "अब की बार 400 पार" हुआ – लेकिन दूसरे देश में!"

लोकसभा में 240 सीटों पर सिमटी भाजपा

बता दें कि देश में हुए लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा ने अब की बार 400 पार का नारा दिया था।

भाजपा ने दावा किया था पीएम नरेंद्र मोदी की अगुवाई में एनडीए को 400 से ज्यादा सीटें आएंगी। वहीं, 370 से ज्यादा सीटें जीतेगी। हालांकि, चुनावी नतीजों में एनडीए को 293 सीटें हासिल हुई। वहीं, भाजपा 240 सीटों पर सिमट गई।

बसपा प्रमुख के. आर्मस्टान्ग,घर के बाहर की गई बेरहमी से हत्या

चेन्नई। बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी इस घटना पर नाराजगी जाहिर की है और तमिलनाडु सरकार से दोषियों को सख्त सजा देने की मांग की है। तमिलनाडु बसपा के अध्यक्ष के. आर्मस्ट्रॉन्ग की शुक्रवार को उनके घर के बाहर बेरहमी से हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार, आर्मस्ट्रॉन्ग पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ अपने घर के सामने ही थे, इसी दौरान दो बाइक पर सवार छह लोग आए और आर्मस्ट्रॉन्ग पर धारदार हथियारों से हमला कर दिया। बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी इस घटना पर नाराजगी जाहिर की है और तमिलनाडु सरकार से दोषियों को सख्त सजा देने की मांग की है।

कौन थे बसपा प्रमुख के आर्मस्ट्रान्ग

के.आर्मस्ट्रॉन्ग ने तिरुपति की वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी से लॉ की डिग्री ली थी और वह चेन्नई कोर्ट में वकालत करते थे। आर्मस्ट्रॉन्ग ने साल 2006 में निगम पार्षद का चुनाव लड़कर जीता और उसी साल उन्हें तमिलनाडु बसपा का प्रमुख बनाया गया। साल 2011 के तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में आर्मस्ट्रॉन्ग ने कोलाथुर सीट से चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा। उनके परिवार में पत्नी और एक बेटी है। आर्मस्ट्रॉन्ग दलितों और वंचितों के अधिकारों के समर्थक थे और इसे लेकर काफी मुखर थे। चेन्नई में बसपा का जनाधार खास नहीं है, लेकिन के आर्मस्ट्रॉन्ग दलित वर्ग की राजनीति का एक जाना पहचाना नाम थे।

बसपा कार्यकर्ताओं ने किया हंगामा

शुक्रवार शाम करीब 7 बजे आर्मस्ट्रॉन्ग चेन्नई में वेणुगोपाल स्ट्रीट स्थित अपने घर के बाहर खड़े हुए थे। इस दौरान उनके साथ पार्टी के कई कार्यकर्ता भी उनके साथ थे। तभी दो बाइकों पर सवार होकर आए छह हमलावरों ने धारदार हथियारों से आर्मस्ट्रॉन्ग पर हमला कर दिया। हमले के बाद हमलावर फरार हो गए। इसके बाद वहां मौजूद कार्यकर्ता उन्हें लेकर अस्पताल पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने आर्मस्ट्रॉन्गक को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद बसपा कार्यकर्ताओं ने हंगामा कर दिया और पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। हंगामा कर रहे बसपा कार्यकर्ताओं को नियंत्रित करने में पुलिस को खासी मशक्कत करनी पड़ी।

पुलिस ने हमलावरों की तलाश के लिए दस टीमें बनाई हैं और रात ही आठ लोगों को हिरासत में लिया गया है। बसपा प्रदेश अध्यक्ष की हत्या पर राजनीतिक बयानबाजी भी शुरू हो गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अन्नामलाई ने कहा, 'आर्मस्ट्रॉन्ग की हत्या से गहरा सदमा लगा। हिंसा और क्रूरता का हमारे समाज में कोई स्थान नहीं है, लेकिन पिछले 3 वर्षों में डीएमके शासन में यह एक सामान्य बात बन गई है। राज्य की कानून–व्यवस्था को तहस–नहस करके रख देने के बाद, स्टालिन को खुद से पूछना चाहिए कि क्या राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में बने रहना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है।'

सम्पादकीय

एकल महिलाओं की मदद की पहल

हमारी आधी दुनिया महिलाओं से बनी है। उनके लिए काफी योजनाएं और कार्यक्रम हैं, और नए बन रहे हैं

एक साल से एकल महिलाओं के लिए भी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके माध्यम से ऐसी महिलाओं की पहचान की गई है। महासमुंद, बस्तर और गरियाबंद में ऐसी महिलाओं की संख्या 813 है। इनमें तलाकशुदा, विधवा, अलग रहने वाली, अविवाहित व अकेली वृद्ध महिलाएं शामिल हैं। इन महिलाओं के साथ सामाजिक स्तर पर भेदभाव तो होता ही है, साथ ही उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है। हमारी आधी दुनिया महिलाओं से बनी है। उनके लिए काफी योजनाएं और कार्यक्रम हैं, और नए बन रहे हैं। पंचायतों व स्थानीय निकायों में आरक्षण दिया जा रहा है। शिक्षा में भी वे आगे बढ़ी हैं। सार्वजनिक कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति देखी जाती है। यानी पहले की स्थिति में काफी बदलाव आया है। लेकिन अभी भी कई स्तरों पर उनसे भेदभाव की खबरें आती रहती हैं। उनके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जाता है। इन सबमें विशेष तौर पर एकल महिलाएं सबसे ज्यादा उपेक्षित हैं। न्याय और समानता के लिए उनकी लड़ाई जारी है। छत्तीसगढ़ में उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की पहल की जा रही है। आज इस कॉलम में इस मुद्दे पर बातचीत करना चाहूंगा।

हम छुटपन से देखते आ रहे हैं कि महिलाओं के साथ कई स्तरों पर भेदभाव होता है। बचपन से लेकर बुजुर्ग होने तक उन्हें इसका शिकार होना पड़ता है। अगर मैं मेरे स्कूल के दिनों को याद करूं तो उस समय स्कूलों में बहुत कम लड़कियां पढ़ती थीं। महिलाओं का घरों से निकलना कम होता था। नौकरियों में उनकी संख्या बहुत कम थी। धीरे–धीरे इस स्थिति में बदलाव आया है। लेकिन एकल महिलाओं की स्थिति कई कारणों से अब भी बहुत अच्छी नहीं है।

हाल ही मुझे छत्तीसगढ़ में एकल महिलाओं से रूबरू होकर उनके दुख–दर्द जानने का मौका मिला। इस मुद्दे पर छत्तीसगढ़ में प्रेरक संस्था काम कर रही है। महासमुंद, बस्तर और गरियाबंद जिले में एकल महिलाओं के लिए संस्था का डेयर टू ट्रस्ट कार्यक्रम चल रहा है। जिसके तहत इन महिलाओं के लिए कई स्तरों पर मदद की जा रही है।

संस्था के प्रमुख रामगुलाम सिन्हा ने बताया कि उनकी संस्था पिछले 35 सालों से समाज के सबसे वंचित तबकों के बीच काम कर रही है। कमार आदिवासियों के बीच काम की शुरूआत हुई थी। कमार, विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूह (पीवीटीजी) है। इस आदिवासी समुदाय का प्रकृति से गहरा जुड़ाव है। इनकी मुख्य आजीविका जंगल पर निर्भर है, लेकिन जंगलों में कमी व मौसम बदलाव के कारण कमारों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए उन्हें खेती की ओर मोड़ा। देसी बीजों की खेती–बाड़ी को बढ़ावा दिया और उनकी आजीविका व खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

इसी प्रकार, वन अधिकार कानून, 2006 के क्रियान्वयन में आदिवासियों की मदद की जा रही है। सामुदायिक वन संसाधन अधिकार (सीएफआर) के दावा फार्म की औपचारिकताएं पूरी करवाने में मदद करना, और सामुदायिक वन अधिकार मिलने के बाद जंगल का संरक्षण व संवर्धन की योजना बनवाने में सहयोग करना इत्यादि, संस्था के कामों में शामिल है। इसके अलावा, संस्था का बुजुर्गो के लिए सियान सदन है, जहां 25 वृद्धजन रहते हैं, जिनमें निराश्रित शामिल हैं। दिव्यांग बच्चों के लिए भी आवासीय स्कूल संचालित किया जा रहा है।

इसी कड़ी में पिछले एक साल से एकल महिलाओं के लिए भी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके माध्यम से ऐसी महिलाओं की पहचान की गई है। महासमुंद, बस्तर और गरियाबंद में ऐसी महिलाओं की संख्या 813 है। इनमें तलाकशुदा, विधवा, अलग रहने वाली, अविवाहित व अकेली वृद्ध महिलाएं शामिल हैं। इन महिलाओं के साथ सामाजिक स्तर पर भेदभाव तो होता ही है, साथ ही उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है। इनमें से सबमें विधवा महिलाओं की संख्या ज्यादा है। ये पूरी तरह अकेली पड़ जाती हैं। ऐसी महिलाओं को समाज व परिवार में तिरस्कार या अपमान झेलना पड़ता है। यह सब उन गरीबों परिवारों में और भी कष्टदायक हो जाता है, जहां बुनियादी जरूरतों का अभाव है। अतः अन्य समस्याओं के साथ उन्हें भोजन, दवा, वस्त्र, उचित आवास की कमी का सामना करना पड़ता है।

इसी प्रकार, इनमें से ऐसी महिलाएं भी हैं, जिनके पति गुजर जाने के बाद, उन पर बच्चों की या बुजुर्ग परिवारजनों की जिम्मेदारी आ गई है। लेकिन आर्थिक अभाव के कारण उन्हें जीविका चलाने में और बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में भी कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। रामगुलाम सिन्हा बताते हैं कि 20 से 25 उम्र की आयु में किसी महिला का विधवा हो जाना, बहुत बड़ी त्रासदी है। उनके सामने पूरी जिंदगी होती है, और कदम–कदम पर कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पति की संपत्ति से बेदखल करने की कोशिश, घरेलू हिंसा और कई तरह सामाजिक तिरस्कार को झेलना पड़ता है। ऐसी महिलाओं को मदद की जरूरत होती है।

इसके अलावा, ऐसी कई बुजुर्ग महिलाएं हैं, उनके गिरते स्वास्थ्य और थकान के कारण रोजाना के काम नहीं कर पाती हैं। संयुक्त परिवार टूटने से भी महिलाओं की समस्याएं बढ़ जाती हैं। कुछ ऐसी अकेली महिलाएं भी हैं, जिन्हें खुद के लिए घर की जरूरत हैं, लेकिन उन्हें न तो जगह मिल पा रही है और न ही उसे बनाने के लिए आवास योजनाओं से राशि।

रामगुलाम सिन्हा ने बताया कि प्रेरक संस्था ने इन महिलाओं की मदद के लिए चार स्तरों पर हस्तक्षेप किया है। सबसे पहले उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सब्जी बाड़ी (किचिन गार्डन) के लिए देसी सब्जियों के बीज वितरित किए हैं। जिससे उन्हें परिवार के लिए ताजी सब्जियां मिल सकें। और अतिरिक्त होने पर कुछ आमदनी भी हो सके। सुरक्षित व पौष्टिक भोजन मिल सके। मुर्गीपालन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो। इन सबसे उनकी टिकाऊ आजीविका की रक्षा के साथ देसी बीजों की विरासत, जैव विविधता व पर्यावरण का भी संरक्षण होगा। वे आत्मनिर्भर बनेंगी।

इसके अलावा, शासकीय कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए राशन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक खाता खुलवाने इत्यादि के काम किए जा रहे हैं। ऐसी पात्र महिलाओं को विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन, विकलांग पेंशन, महतारी वंदन योजना, मनरेगा जैसी योजनाओं से जोड़ने की कोशिश की जा रही है। जिससे इन योजनाओं का उन्हें लाभ मिल सके।

महिला और पुरूषों की बराबरी के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाना, जिसमें महिला दिवस मनाना भी शामिल है। इसके अलावा, सामाजिक लिंग भेद पर कार्यशालाएं आयोजित करना। इसमें किशोरी लड़कियों व बच्चों को भी जोड़ना। पर्यावरण व स्वच्छता के प्रति भी लोगों को सजग बनाना। महिलाओं के घरेलू व अदृश्य अवैतनिक कामों का भी सम्मान करना।

साथ ही ऐसी महिलाओं के लिए ऐसा मंच उपलब्ध कराना जिसमें वे एक साथ आ सकें, उनका दुख–दर्द बांट सकें, एक दूसरे से जुड़ सकें, खुलकर बात कर सकें और आपस में अनुभव साझा कर सकें। कोई महिला सहज महसूस कर सके, चाहे वह अकेली हो।इसके अलावा, जिन महिलाओं को कानूनी सहायता की जरूरत है, उन्हें ये सुविधाएं उपलब्ध कराना। इसके लिए वरिष्ठ महिलाओं से परामर्श व कानूनी सहायता लेना और उनके अधिकारों के लिए लड़ना।

कुल मिलाकर, इन पहलों का असर यह हो रहा है कि ये महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। सब्जी बाड़ी लगाने से उन्हें ताजी हरी सब्जियां मिल रही हैं, कुछ आमदनी भी हो रही है। पेंशन, विधवा और वृद्धावस्था जैसी योजनाओं का लाभ मिलने लगा है। राशन कार्ड से अनाज मिल रहा है। महिलाओं के समूह में जुड़ने से उनकी एक साथ आवाज उठ रही है। लेकिन इस दिशा में अभी काफी कुछ करने की जरूरत है। यह तो अभी शुरूआत भर है। उनके लिए बच्चों को निशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, आवास योजनाओं को लाभ, भूमिहीन महिलाओं को किचिन गार्डन के लिए भूमि के साथ ही विवाह संस्था से बाहर वाली महिलाओं को योजनाओं में प्राथमिकता मिलना चाहिए। इसके साथ ही समाज का भी उनके प्रति नजरिया बदलना जरूरी है। उनके साथ न्याय व समानता का व्यवहार होना चाहिए। लेकिन क्या हम अपनी सोच में बदलाव करने के लिए तैयार हैं?

पुलिस राज की शुरुआत

पिछली लोकसभा में पारित नये कानूनों के सोमवार से लागू होने के साथ ही भारत में नये सिरे से पुलिस राज की शुरुआत हो रही है। 2024 के लोकसभा चुनाव में महिला मतदाता निभायेंगी अहम भूमिकालोकसभा चुनाव में धन और बाहुबल पर अंकुश लगाना चुनौतीपूर्ण। पिछली लोकसभा में पारित नये कानूनों के सोमवार से लागू होने के साथ ही भारत में नये सिरे से पुलिस राज की शुरुआत हो रही है। ऐसे वक्त में जब दुनिया भर के विकसित व लोकतांत्रिक देशों की सरकारें अपने नागरिकों को अधिक आजाद और अधिकार सम्पन्न कर रही हैं, भारत को 'लोकतंत्र की जननी' कहने वाली सरकार ने जिस न्याय संहिता को लागू करने का ऐलान किया है, उससे नागरिकों पर पुलिस के जरिये उसका सख्त पहरा बैठ जायेगा। उसकी आजादी को जैसा बड़ा खतरा नयी न्याय संहिता से होने जा रहा है, वैसा पहले कभी नहीं रहा।

अनेक पुराने कानूनों को हटाकर या बदलकर औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति दिलाने के नाम पर भारतीय दण्ड संहिता में व्यापक फेरबदल कर दिये गये हैं जिनसे जहां एक तरफ काफी समय तक व्यवहारिक दिक्कतें तो आयेंगी ही, पुलिस दमन की राहें भी खुल जायेंगी। अनेक न्यायविद एवं वकालत के पेशे में रहने वाले भी इस परिवर्तित संहिता से खौफ़ज़दा दिख रहे हैं। उनका मानना है कि नये कानून पुलिस के हाथ मजबूत करेंगे और नागरिकों को न्याय मिलने की आशाएं धूमिल हो जायेंगी। न्याय पाना और भी कठिन हो जायेगा, जो पहले से दुरुह है। भारत के सन्दर्भ में पहले ही कहा जाता है कि यहां की न्यायिक प्रक्रिया अपने आप में सज़ा पाने से कम नहीं है, जिसमें दोषी व निरपराध दोनों एक सरीखे पिसते हैं। सिर्फ पहुंच और पैसा राहत देता है– निर्दोष को भी, अपराधी को भी।

वैसे तो नये कानूनों को लेकर पहली आपत्ति यही की गई है कि अपराधों को दर्ज करने से लेकर मुकदमे चलाने सम्बन्धी धाराओं का अभ्यस्त होने में पुलिस अधिकारियों, वकीलों व जजों को काफी समय लग जायेगा। न सिर्फ समझना, बल्कि उसकी व्याख्या करना व कोर्ट के समक्ष उसे प्रस्तुत करना अपने आप में बड़ी कवायद होगी, जिसका खामियाजा और किसी को नहीं वरन मामले के पक्षकारों को भुगतना होगा। पहले से लाखों की तादाद में न्यायालयों में लम्बित मामलों के ढेर बढ़ते जाने तय हैं। अब तक जिन धाराओं के अंतर्गत विभिन्न अपराधों को परिभाषित किया गया था, वे सभी सम्बन्धित एजेंसियों एवं पेशेवरों की जुबानों पर रटे हुए थे। अब इसके क्रमांक भी बदल दिये गये हैं। अनेक की परिभाषाएं एवं व्याख्याएं भी बदल गई हैं। इनकी सज़ाओं में भी बदलाव कर दिये गये हैं। पूरे पुलिस विभाग को अपराधों को पंजीबद्ध करने, वकीलों को उन्हें प्रस्तुत एवं न्यायपालिका को उन्हें समझकर न्याय देने में नयी माथापच्ची करनी पड़ेगी।

यह तो रहा नये कानूनों का व्यवहारिक पक्ष, लेकिन जिन इरादों के साथ ये कानून लाये गये हैं और जैसा उनका प्रभाव पड़ने जा रहा है, वह कहीं अधिक भयावह है। उनमें से कुछ का उल्लेख किया जाना समीचीन होगा। पुलिस व न्यायिक अभिरक्षा में आरोपी को रखने की वैध मियाद को 15 दिनों से बढ़ाकर अब 90 दिनों तक कर दिया गया है। यह बतलाने की ज़रूरत नहीं है कि अपराधी हों या निर्दोष, इन दोनों तरह की कस्टडियां किस तरह सभी के लिये एक जैसी नारकीय हैं। फिर, पुलिस लॉकअप हो अथवा जेलें– दोनों में क्षमता से अधिक आरोपी या सज़ायाफ़्ता रखे जाते हैं। मानव गरिमा के विपरीत परिस्थितियां तो उनमें पहले से मौजूद हैं, इस बात की कल्पना सहज की जा सकती है कि बढ़ी हुई संख्या में वे किस तरह से सलाखों के पीछे दिन काटेंगे। उन्हें जीवनावश्यक सुविधाएं मुहैया कराना भी अपने आप में एक बड़ी चुनौती होगी।'राजद्रोह' शब्द तो नयी न्यायिक संहिता से हटा दिया गया लेकिन बहुत से नये आधार बनाकर लोगों को जेलों में बगैर मुकदमा चलाना आसान तथा जमानत प्रक्रिया को कठिन बना दिया गया है। देश की एकता व अखंडता को नुकसान पहुंचाने वाले कृत्यों के खिलाफ लाये गये कानून अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के खिलाफ उठने वाली आवाज़ों को खामोश करने का बढ़िया ज़रिया बन जायेंगे। यह धारा लगाने का विवेकाधिकार भी अपेक्षाकृत निचले स्तर के अधिकारी के पास हो गया है। इनमें भी लम्बे समय तक जमानत न मिलने के प्रावधान कर दिये गये हैं। इसका अनुमान लगाना कोई मुश्किल नहीं है कि जिस सरकार ने विपक्षी नेताओं, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, लेखकों, बुद्धिजीवियों, ट्रेड यूनियन व किसान संगठनों के नेताओं आदि के खिलाफ पहले से एक अभियान जैसा छेड़ रखा है उसका व्यवहार ये काले कानून हाथ में लग जाने के बाद कैसा होगा। जिस गैरकानूनी गतिविधियां (प्रतिबंध) कानून यानी यूएपीए के चलते न जाने कितने मानवाधिकार कार्यकर्ता एवं बुद्धिजीवी लम्बे समय से जेलों में सड़ रहे हैं, सरकार के हाथ नये कानूनों से और भी ताकतवर हो जायेंगे। इसके साथ ही यह भी माना जा रहा है कि इसके जरिये परम्परागत प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अतिरिक्त स्वतंत्र मीडिया (सोशल) का गला घोंटना भी आसान हो जायेगा। सरकार विरोधी खबरों, रिपोर्ताज या समीक्षाओं को देश की एकता–अखंडता के लिये खतरा बतलाकर ऐसे पत्रकारों तथा मीडिया संस्थानों को सरकार द्वारा डराना बेहद आसान हो जायेगा।

याद हो कि पिछली लोकसभा के अंतिम दिनों में ये कानून एक सुनियोजित षडयंत्र के अंतर्गत पास कराये गये थे। पहले दोनों सदनों के तकरीबन डेढ़ सौ सांसदों को निलम्बित कराया गया तत्पश्चात केवल सत्ता पक्ष या गिनती के विरोधी दलों के सदस्यों की उपस्थिति में ये कानून पारित किये गये। नोटबन्दी, जीएसटी, कृषि कानून, इलेक्टोरल बॉड्स, पीएम केयर फंड आदि की ही तरह इस पर न तो पर्याप्त चर्चा हुई और न ही न्यायविदों व कानून विशेषज्ञों की राय ली गई। सरकार निश्चित ही जानती रही होगी कि नागरिक स्वतंत्रता के पक्ष में खड़ा कोई भी व्यक्ति इनके खिलाफ होगा।

एनडीए के सामने बड़े सवाल

पहले अपने सहयोगी घटक दलों के जरिए मोदी ने मजबूत होने का संदेश दिया, फिर प्रोटेम स्पीकर के मामले में विपक्ष को बेपरवाही से दरकिनार कर दिया। भाजपा ने प्रोटेम स्पीकर के लिए उड़ीसा से सातवीं बार के सांसद भर्तृहरि महताब को चुना जबकि विपक्ष का दावा था कि केरल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और पिछली लोकसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक रहे आठवीं बार के सांसद अडूर सीट से जीतकर आने वाले दलित के.सुरेश सबसे वरिष्ठ हैं। इसलिए उन्हें प्रोटेम स्पीकर बनाया जाना चाहिए। लेकिन नरेंद्र मोदी ने इसे स्वीकार नहीं किया। 2024 के लोकसभा चुनाव में 240 सीटों पर सिमटने के बावजूद नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के समर्थन से नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने में कामयाब हो गए हैं। लेकिन इस बार विपक्ष बेहद मजबूत है। विपक्ष के पास 230 से ज्यादा सांसद हैं। पिछले 10 साल नरेंद्र मोदी ने तानाशाहपूर्ण तरीके से सरकार चलाई। संसद में होने वाली बहसों और सड़कों पर होने वाले आंदोलनो पर भी नरेंद्र मोदी ने कभी जवाबदेही नही स्वीकार की। क्या अपने तीसरे कार्यकाल में नरेंद्र मोदी उत्तरदायी सरकार चलाएंगे? क्या विपक्ष एकजुट होकर सरकार को घेरेगा? क्या एनडीए सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी? आज भारतीय लोकतंत्र के सामने ऐसे तमाम सवाल खड़े हुए हैं?

24 जून को 18वीं लोकसभा का पहला सत्र शुरू हो चुका है। नरेंद्र मोदी ने पहले दिन से ही संकेत दिए हैं कि वह भले ही एनडीए की सरकार चला रहे हैं लेकिन उनके काम का तरीका और तेवर वही पुराने रहेंगे। अलबत्ता, अबकी बार नरेंद्र मोदी के लिए राह आसान नहीं है। भाजपा के भीतर भी मोदी विरोध में आवाजें उठने लगी हैं। वसुंधरा राजे सिंधिया, शिवराज सिंह चौहान, नितिन गडकरी और योगी आदित्यनाथ जैसे गुजराती लॉबी के विरोधी नेता जी हुजूरी करने के लिए तैयार नहीं हैं। यही कारण है कि मोदी ने भाजपा संसदीय दल की बैठक के बजाय एनडीए की बैठक में नेता सदन का प्रस्ताव पास कराया। वे जानते हैं कि अगर नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू काबू में रहे तो उन्हें कोई खतरा नहीं है। इसलिए जेडीयू और टीडीपी से अंदरूनी समझौते के बाद नरेंद्र मोदी ने उनकी पार्टियों को मंत्रिमंडल में झुनझुना पकड़ा दिए। गृह, विदेश, रक्षा, रेल और वित्त जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय मोदी ने भाजपा के ही पास रखे। इन मंत्रालयों में पिछले कार्यकाल के मंत्रियों की पुनः बहाली से मोदी ने संकेत दिया है कि वे कहीं से भी कमजोर नहीं हैं।

पहले अपने सहयोगी घटक दलों के जरिए मोदी ने मजबूत होने का संदेश दिया, फिर प्रोटेम स्पीकर के मामले में विपक्ष को बेपरवाही से दरकिनार कर दिया। भाजपा ने प्रोटेम स्पीकर के लिए उड़ीसा से सातवीं बार के सांसद भर्तृहरि महताब को चुना जबकि विपक्ष का दावा था कि केरल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और पिछली लोकसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक रहे आठवीं बार के सांसद अडूर सीट से जीतकर आने वाले दलित के.सुरेश सबसे वरिष्ठ हैं। इसलिए उन्हें प्रोटेम स्पीकर बनाया जाना चाहिए। लेकिन नरेंद्र मोदी ने इसे स्वीकार नहीं किया। इसके बाद स्पीकर के लिए तकरार शुरू हुई। राजनाथ सिंह के जरिए पहली बार स्पीकर पद के लिए आमराय बनाने का दिखावा किया गया। पहले एनडीए की बैठक में राजनाथ सिंह ने मोदी की राय बता दी कि स्पीकर उनकी ही पसंद का होगा। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष से संपर्क करके उनका समर्थन मांगा। विपक्ष ने संसद की परंपरा का हवाला देते हुए डिप्टी स्पीकर की मांग की। इस पर राजनाथ सिंह कोई आश्वासन नहीं दे सके। इसके बाद विपक्ष ने के. सुरेश को स्पीकर के लिए अपना प्रत्याशी बनाया। लेकिन 26 जून को ध्वनिमत से मोदी की पसंद ओम बिरला को फिर से लोकसभा का स्पीकर चुन लिया गया। अब लगता है कि डिप्टी स्पीकर भी एनडीए का होगा। नरेंद्र मोदी परंपराभंजक हैं। लोकतंत्र की मर्यादा और विपक्ष के प्रति कोई सम्मान नरेंद्र मोदी के मन में नहीं है। उनके लिए जनविश्वास भी नंबर गेम है। नरेन्द्र मोदी के लिए लोकतंत्र महज चुनाव है। चुनाव जीतने के लिए परंपराएं, मर्यादाएं, मूल्य और नीतियां कोई मायने नहीं रखतीं। अब सवाल यह है कि इस बार भी क्या नरेंद्र मोदी क्या निरंकुश सरकार चलाएंगे? नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की ओर सबकी निगाहें लगी हुई हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि नीतीश कुमार ने समर्पण कर दिया है। नीतीश कुमार की निगाह में केवल बिहार है। उनका एजेंडा बिहार को विशेष आर्थिक पैकेज हासिल करना और विधानसभा चुनाव जीतकर पुनः मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान रहना है। जबकि भाजपा की प्राथमिकता बिहार में अपना मुख्यमंत्री बनाना है। इसके लिए मोदी– शाह नीतीश कुमार की पार्टी तोड़ने में भी संकोच नहीं करेंगे। क्या इससे नीतीश कुमार अनजान हैं? इसी तरह आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की प्राथमिकता विशेष आर्थिक पैकेज हासिल करना है। नई राजधानी अमरावती उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है। 16 सांसदों वाली टीडीपी के बिना नरेंद्र मोदी सरकार नहीं चला सकते। फिर भी नायडू ना तो अपना स्पीकर बनवा सके और ना ही कोई ढंग का मंत्रालय उन्हें मिला। लोग हैरान हैं कि आखिर नीतीश और नायडू ने मोदी के सामने आत्म समर्पण क्यों कर दिया? मोदी सरकार में उन्हें ना तो उचित स्थान मिला है और ना ही समुचित सम्मान। क्या नीतीश और नायडू विशेष आर्थिक पैकेज के लिए ही चुप है?

किशोरी का शव घर में फंदे से लटका मिला

देवरिया । देसही देवरिया के रामपुर दुबे गांव में बृहस्पतिवार की दोपहर एक किशोरी का शव फंदे से लटका हुआ मिला। इस बात की जानकारी होते ही घर में चीख – पुकार मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।
महुआडीह थानाक्षेत्र के रामपुर दुबे गांव के गणेश चौहान का परिवार बृहस्पतिवार को खेत में काम करने गया था। दोपहर घर वापस आए तो देखा कि उनकी बेटी मधु (15) का शव एलबेस्टर के मकान में बल्ली से फंदे से लटका हुआ था। शोर मचाने पर गांव के लोग जुट गए। शव को नीचे उतारा गया। तब तक मधु की मौत हो चुकी थी। मधु की मौत की जानकारी होते ही घर में चीख– पुकार मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।
एसओ गिरीश चंद राय ने बताया कि रामपुर दुबे गांव के गणेश चौहान की बेटी मधु का घर में फंदे से लटका हुआ शव मिला है। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है।

चार लोगों पर दुष्कर्म का आरोप लगा वसूली, पांचवीं बार फंस गई

गोरखपुर। आरोपी महिला का पति बाहर रहकर कमाता है। वह सास–ससुर से भी अलग हो गई है और अकेले ही रहती है। वह गांव में किसी के पास जाती है तो यही कहती है कि पति ने बताया है कि उसके खाते में पांच हजार रुपया भेजा गया है। वह रुपये दे दो। आदमी अकाउंट चेक करने के बाद यह कहता है कि रुपये नहीं आए तो अगले दिन वह थाने पर पहुंच जाती है। कैंपियरगंज इलाके के एक गांव में महिला की ओर से फर्जी प्रार्थना पत्र देकर वसूली करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि महिला अब तक चार लोगों से इसी तरह से वसूली कर चुकी है। लेकिन, इस बार पुलिस ने उसके आरोपों की जांच शुरू कर दी है। एसपी नार्थ ने प्रकरण की गंभीरता से जांच के आदेश दिए हैं।
एसपी ने साफ कह दिया है कि अगर वह दोषी है और झूठे केस दर्ज कराती है तो जांच कर महिला पर कार्रवाई की जाए। जानकारी के मुताबिक, महिला का पति बाहर रहकर कमाता है। वह सास–ससुर से भी अलग हो गई है और अकेले ही रहती है। वह गांव में किसी के पास जाती है तो यही कहती है कि पति ने बताया है कि उसके खाते में पांच हजार रुपया भेजा गया है।
वह रुपये दे दो। आदमी अकाउंट चेक करने के बाद यह कहता है कि रुपये नहीं आए तो अगले दिन वह थाने पर पहुंच जाती है। हाथ में दुष्कर्म का प्रार्थना पत्र लिए आने वाली महिला की फरियाद पर पुलिस सक्रिय होती है और आरोपी को बुलाया जाता है। फिर वह डर के कारण मामले को मैनेज करने के नाम पर वसूली करती है। गांव के चार लोगों के साथ वह ऐसा कर चुकी है। अब उसने फिर गांव के एक शख्स पर इसी तरह का आरोप लगाया है। पुलिस प्रकरण की जांच शुरू कर दी है।
एसपी नार्थ जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि महिला ने कार्रवाई न करने का प्रार्थना पत्र दिया है। थाने से पता चला कि गांव के कई लोगों ने उसके घरवालों के साथ शपथ पत्र देकर उसकी करतूत बताई है। आरोपों की जांच का निर्देश दिए गए हैं। अगर महिला गलत पाई गई तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

डीडीयू में बनेगा गुरू गोरक्षनाथ शोधपीठ

होगा नाथ पंथ का संग्रहालय, संरक्षित किए जाएंगे ये धरोहर

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथ पंथ संग्रहालय बनेगा। यहां पर नाथ पंथ से संबंधित पांडुलिपि और दुर्लभ वस्तुओं को संरक्षित किया जाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रस्ताव तैयार कर लिया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथ पंथ संग्रहालय बनेगा। यहां पर नाथ पंथ से संबंधित पांडुलिपि और दुर्लभ वस्तुओं को संरक्षित किया जाएगा। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रस्ताव तैयार कर लिया है।
जल्द ही इसे शासन को भेजा जाएगा। योजना के मुताबिक, नाथ पंथ संग्रहालय को महाराणा प्रताप परिसर स्थित शोधपीठ के द्वितीय तल पर बनाया जाएगा। इसपर करीब दो करोड़ रुपये खर्च होंगे। जल्द ही इसका प्रेजेंटेशन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के समक्ष किया जाएगा। इसके बाद शासन के पास भेजा जाएगा।
गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में नाथ पंथ पर शोध कार्य हो रहे हैं। गोरखनाथ मंदिर दर्शन के लिए श्रद्धालु पूरे देशभर से आते हैं। पिछले कुछ समय में इनकी संख्या में काफी इजाफा हुआ है। इसमें बहुत सारे लोगों को नाथ संप्रदाय

के इतिहास के बारे में जानने और समझने की इच्छा होती है। ऐसे लोगों को आसानी से यह जानकारी उपलब्ध हो, इसके लिए विश्वविद्यालय की ओर से नाथ पंथ संग्रहालय बनाने की योजना बनाई गई है।

संग्रहालय में होगा नाथ पंथ पर डाक्यूमेंटरी का प्रदर्शन

संग्रहालय में नाथ पंथ पर हुए पुराने कार्यों के बारे में जानकारी मिलेगी। इसमें नाथ पंथ पर हुए शोध और किताबें मौजूद रहेंगी। इसके साथ ही नाथ योगियों की वेशभूषा, इससे जुड़ी पांडुलिपियां रखी जाएंगी। संग्रहालय आने वाले लोगों को नाथ पंथ का इतिहास बताने के लिए एक डॉक्यूमेंटरी भी दिखाई जाएगी।

शोधपीठ में है नाथ पंथ लाइब्रेरी

गोरक्षनाथ शोधपीठ में प्रथम तल पर एक लाइब्रेरी है, जिसमें नाथ पंथ से जुड़ीं दो हजार से अधिक किताबें हैं। इसमें विद्यार्थियों और शोधार्थियों के अलावा आम लोग भी जाकर नाथ पंथ के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने बताया कि लाइब्रेरी में अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं की नाथ पंथ से संबंधित लगभग 2000 से अधिक पुस्तकें हैं। संग्रहालय बन जाने से यह एक ऐसा केंद्र बन जाएगा, जहां पर नाथ पंथ से जुड़ी सभी जानकारी उपलब्ध होगी।
गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो पूनम टंडन ने बताया कि गोरखपुर की पहचान गोरक्षनाथ मंदिर और नाथ पंथ से है। शोधपीठ को नाथ पंथ के एक जीवंत केंद्र के रूप में विकसित करना है। प्रस्तावित संग्रहालय में नाथ पंथ से संबंधित समस्त पांडुलिपि, चित्र, नाथ योगियों की वेशभूषा, दुर्लभ प्राचीन वस्तुओं एवं अन्य उपलब्ध सामग्रियों का संग्रह होगा।

सीवर लाइन डालकर छोड़ दी, नहीं बनी सड़क– स्कूली बच्चों के लिए सांसत

सेंट जोसफ स्कूल गोरखनाथ की छूट्टी होने के बाद पानी व कीचड़ के रास्ते जाते बच्चें अभिभावक

गोरखपुर । बारिश ने भीषण गर्मी से तो राहत दिलाई है, लेकिन टूटी सड़कों पर कीचड़ से लोगों को काफी परेशानी हो रही है। सेंट जोसेफ स्कूल गोरखनाथ जाने वाली सड़क पर सीवर लाइन डालने के बाद काम अधूरा छोड़ दिया गया। बारिश में कीचड़ भरी सड़क बच्चों के साथ ही अभिभावकों के लिए सांसत बन गई है।
दो दिनों से लगातार हो रही बारिश के बाद सड़क पर कीचड़ पट गया है। कई जगह सड़क पर पानी भी भरा है। बुधवार सुबह तेज बारिश के बीच बच्चे परेशानी झेलकर स्कूल पहुंचे।
कई बच्चों की ड्रेस भी खराब हो गई। दोपहर के समय भी यही हाल रहा। स्कूल से निकलने वाले बच्चों की जुबां पर यही था कि आखिर ये रोड कब बनेगा। रोज–रोज जूते और ड्रेस खराब हो जाती है।
अभिभावक अस्मिता जायसवाल ने बताया रास्ता बहुत खराब है। बारिश के बाद इसपर चलना और मुश्किल हो गया है। बच्चों की ड्रेस खराब हो जाती है और गिट्टी पर उनके गिरने का भी डर रहता है। अभिभावक डॉ गौरंग श्रीवास्तव ने बताया कि पिछले एक साल से सड़क टूटी पड़ी है। सीवर लाइन पड़ गई, लेकिन अभी तक सड़क नहीं बनी। बच्चों को स्कूल छोड़ने आने पर काफी परेशानी होती है अधीक्षण अभियंता जल निगम रतनसेन सिंह ने बताया कि सड़क पर सीवर लाइन पड़ गई है। अब जल्द ही इसे बना दिया जाएगा। तब तक लोगों को परेशानी न हो इसके लिए गिट्टी डालकर बराबर किया जाएगा।

एमएमएमयूटी में दूसरे दिन भी नकल करते धराए 14 छात्र

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर। मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमएमएमयूटी) में परीक्षाओं के दौरान लगातार दूसरे दिन बुधवार को भी सघन तलाशी अभियान चलाया गया। इसमें 14 छात्र प्रतिबंधित या नकल सामग्री के साथ पकड़े गए हैं। उनके खिलाफ अनुचित साधन (यूएफएम) के तहत कार्रवाई की गई है। पकड़े जाने वालों में स्नातक और परास्नातक के साथ पीएचडी कोर्स वर्क के भी छात्र शामिल हैं।
एमएमएमयूटी में बुधवार को सुबह 10–1 बजे की पाली में बीटेक द्वितीय सेमेस्टर के साथ ही बीबीए, एमबीए और बीफार्मा की परीक्षा थी। परीक्षा कक्ष में जाने से पहले एक–एक छात्र को जरूरी दिशा–निर्देश दिए गए। चेकिंग भी हुई। उसके बाद भी कई छात्र चिट लेकर पहुंचे थे।
कुलपति प्रो. जेपी सैनी के आदेश पर परीक्षा शुरू होते ही परीक्षा विभाग, नियंत्रण मंडल और फ्लाइंग स्कवायड की टीम ने एक साथ छापेमारी शुरू कर दी। सभी छात्र–छात्राओं की तलाशी ली जाने लगी। एममएमएयूटी प्रशासन के मुताबिक सभी छात्र–छात्राओं की तलाशी ली गई।
पहली पाली में 10 विद्यार्थियों को प्रतिबंधित सामग्री या नकल सामग्री के साथ पकड़ा गया। इनमें एक छात्र मोबाइल लेकर परीक्षा कक्ष में पहुंचा था। पहली पाली में पकड़े जाने वालों में सात छात्र बीटेक के बताए जा रहे हैं। इसके अलावा बीबीए और एमबीए के चार छात्र थे।
पीएचडी कोर्स वर्क का भी एक छात्र प्रतिबंधित सामग्री के साथ पकड़ा गया है। इसी तरह दूसरी पाली की दोपहर 2–5 बजे की परीक्षा में एमटेक के दो विद्यार्थी अनुचित साधन प्रयोग में पकड़े गए हैं।

पकड़े जाने वालों में 13 रेगुलर छात्र

मंगलवार को हुई छापेमारी में बीटेक द्वितीय सेमेस्टर के बैकपेपर, छूटी हुई (कैरीओवर) परीक्षा दे रहे 30 छात्र पकड़े गए थे, जबकि 5 द्वितीय सेमेस्टर के नियमित छात्र थे। बुधवार को पकड़ में आने वालों में एक छात्र कैरीओवर का था, जबकि बाकी नियमित थे।
एमएमएमयूटी के कुलपति प्रो जेनी सैनी ने बताया कि परीक्षा के दौरान लगातार दूसरे दिन छापेमारी की गई। इसमें कई छात्र प्रतिबंधित या नकल सामग्री के साथ पकड़े गए हैं। परीक्षा की शुचिता और पारदर्शिता के लिए छापेमारी जारी रहेगी। कैंपस में नकल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

पिस्टल के बल पर छात्रा से की छेड़खानी

पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज– असलहा लिए फोटो वायरल

देवरिया। एकतरफा प्यार में दीवानगी की हदें पार करने वाले छेड़खानी के आरोपी युवक की पिस्टल के साथ फोटो इन दिनों सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। आरोपी विभिन्न तरीके से पिस्टल दिखा कर पीड़ित परिवार को धमका रहा है। शिकायत मिलने के बाद पुलिस फरार युवक को गिरफ्तार करने में लगी है।
नगर के एक वार्ड की रहने वाली हाईस्कूल की छात्रा के साथ पिस्टल के बल पर छेड़खानी करने का मामला प्रकाश में आया है। एकतरफा प्यार में पागल युवक ने किशोरी से प्यार कबूल नहीं करने पर उसे व उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दी है।
इससे परेशान छात्रा पढ़ाई छोड़ घर पर ही रह रही है। शिकायत पर पुलिस ने बुधवार को आरोपी युवक पर छेड़खानी, जान से मारने की धमकी और पॉक्सो एक्ट के तहत कार्रवाई की है। केस दर्ज होने के बाद आरोपी फरार है। पुलिस उसके घर दबिश दे रही है।
भटनी नगर के वार्ड–11 निवासी हाईस्कूल की एक छात्रा ने मनचले की सरेराह छेड़खानी से परेशान होकर पढ़ाई छोड़ दी है। उसने पुलिस से शिकायती पत्र में बताया कि हतवा वार्ड का रहने वाला एक युवक एक माह से छेड़खानी कर रहा है।
एक सप्ताह पूर्व उसने कोचिंग जाते समय रास्ते में घेर कर पिस्टल के बल पर छेड़छाड़ की। साथ ही प्यार कबूल नहीं करने पर छात्रा और उसके परिजनों को गोली मारने की धमकी दे डाली। पहले तो किशोरी ने डर के मारे इसके बारे में किसी को नहीं बताया, लेकिन बाद में युवक की हरकतें बढ़ने और अश्लील फोटो शेयर करने पर छात्रा ने पढ़ाई छोड़ इसकी जानकारी अपने मामा को दी।
बता दें कि छात्रा पिता की मौत के बाद अपने मामा के घर रहकर पढ़ाई करती है। हालांकि मामा की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी युवक पर छेड़खानी, जान से मारने की धमकी और पॉक्सो एक्ट के तहत कार्रवाई की है।

छेड़खानी के आरोपी युवक का पिस्टल के साथ फोटो वायरल

एकतरफा प्यार में दीवानगी की हदें पार करने वाले छेड़खानी के आरोपी युवक की पिस्टल के साथ फोटो इन दिनों सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। आरोपी विभिन्न तरीके से पिस्टल दिखा कर पीड़ित परिवार को धमका रहा है। शिकायत मिलने के बाद पुलिस फरार युवक को गिरफ्तार करने में लगी है। क्षेत्राधिकारी भाटपाररानी शिव प्रताप सिंह ने बताया कि छात्रा के साथ छेड़खानी करने वाले युवक के विरुद्ध छेड़छाड़, जान से मारने की धमकी व पॉक्सो एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। उसकी गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है। इसके अलावा पिस्टल के साथ वायरल फोटो की भी जांच चल रही है।

हाथरस हादसे के पीड़ित परिवारों का ढाढस बांधते नेता विपक्ष राहुल गांधी

हाथरस हादसा कब और कैसे हुआ?: बाबा के पंडाल में पहुंचने से लेकर भगदड़ तक, सिलसिलेवार ढंग से पूरा घटनाक्रम

अलीगढ़। पुलिस व प्रत्यक्षदर्शी 2 जुलाई से ही घटना के लिए लाठी–डंडे वाले सेवादारों व सुरक्षागार्डों को जिम्मेदार मान रहे हैं। अगर वे रोकटोक न करते, धक्का मुक्की न करते तो शायद इतनी बड़ी घटना न होती। हाथरस के सिकंदराराऊ के फुलरई मुगलगढ़ी गांव में 2 जुलाई, मंगलवार के दिन जो अमंगल हुआ शायद ही उसे कभी भुलाया जा सके। भगदड़ में 121 लोगों की जान गई, जिनमें ज्यादातर महिलाएं हैं। कई लोग घायल हो गए। घटना के बाद लोगों में दर्द है तो आयोजकों की लापरवाही पर गुस्सा भी। जिस आयोजन के लिए 80 हजार लोगों की अनुमति ली गई, वहां पर 2.50 लाख से अधिक लोग आ गए थे। यह हादसा कब और कैसे हुआ? इस हादसे के पीछे कौन गुनहगार हैं? अब तक पुलिस कार्यवाई कहां तक पहुंची है? आइए जानते हैं इन सवालों के जवाब।

2 जुलाई, 12 बजे दोपहरः सत्संग शुरू

मंगलवार को हाथरस के सिकंदराराऊ के फुलरई मुगलगढ़ी गांव में 2 जुलाई, मंगलवार को साकार विश्वहरि बाबा उर्फ भोले बाबा का सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में 80 हजार लोगों की अनुमति के बावजूद करीब 2.50 लाख से अधिक लोग आ गए।

12.30 बजे दोपहरः साकार नारायण हरि बाबा पंडाल में पहुंचे

दोपहर 12.30 बजे साकार हरि बाबा पंडाल में पहुंचे और उनके पहुंचे ही भीड़ उत्साहित हो उठी। बाबा की प्राइवेट आर्मी ट्रैफिक व्यवस्था से लेकर, पानी और दूसरे इंतजाम देख रही थी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सत्संग में लोगों को मोबाइल निकालने तक की अनुमति नहीं थी। जो भी व्यक्ति वीडियो बना रहा था, उस पर बाबा की प्राइवेट आर्मी लाठी बरसा रही थी।

12.45 बजे दोपहरः एक घंटे तक बाबा के प्रवचन हुए

हजारों की भीड़ होने के बावजूद बाबा ने करीब एक घंटे ही कार्यक्रम को दिए। जबकि भीड़ सुबह से ही बाबा की झलक पाने को बेताब थी। स्थानीय लोग भी यही सवाल उठा रहे हैं कि अगर बाबा कार्यक्रम को दो से चार घंटे का समय देते तो यह हादसा न होता। क्योंकि तब लोग आते–जाते रहते और एक साथ भीड़ के निकलने की नौबत नहीं आती।

1.47 बजे दोपहरः आरती हुई

1.47 बजे आरती शुरू हुई। आरती शुरू होते ही बाबा के अनुयायियों में गहमागहमी मच गई। अगर उस समय ही हालात को देखते हुए सही कदम उठा लिया जाता तो शायद इतने लोग काल के गाल में न समाते।

02 बजे दोपहरः बाबा ने सत्संग समाप्ति की घोषणा की

बताया जाता है कि बाबा के सत्संग समाप्ति की घोषणा के साथ ही बाबा की प्राइवेट आर्मी ने कार्यक्रम स्थल की सारी व्यवस्था को पूरी तरह से अपने कब्जे में ले लिया। लेकिन भीड़ को संभालने के लिए न ही बाबा की निजी आर्मी और न ही पुलिसकर्मी पर्याप्त थे।

2 बजे से 2.30 बजे दोपहरः बाबा का काफिला निकला

स्थानीय लोगों के अनुसार, जब बाबा का काफिला निकला तब भीड़ को रोक दिया गया। इस दौरान चरणों की रज लेने के चक्कर में अनुयायी अनियंत्रित हो गए। भगदड़ के दौरान लोग मरते रहे और बाबा के कारिंदे गाड़ियों से भागते रहे। किसी ने भी रुककर हालात को जानने की कोशिश नहीं की।

2.30 बजे दोपहरः महिलाओं व पुरुषों की भीड़ एक–दूसरे पर गिरने लगी

बाबा का काफिला निकालने के दौरान सेवादारों की बंदिशें थी। लोग उनकी बंदिशें तोड़कर भागे और मौत की सरहद में जा धंसे। कोई धक्के से गिरा तो कोई फिसलकर। किसी का सीना कुचला तो किसी का सिर।

3.15 बजे दोपहरः शव सीएचसी व ट्रॉमा सेंटर पर पहुंचे

हादसे में पुलिस व प्रशासनिक स्तर पर भी लापरवाही सामने आई है। भगदड़ के बाद दोपहर 3.15 बजे शव सीएचसी व ट्रॉमा सेंटर पर पहुंचे। 38 घायलों को उपचार के बजाय रेफर करने की औपचारिकता पूरी की गई। इनमें से कुछ घायलों को अलीगढ़, कुछ को हाथरस और कुछ आगरा रेफर किया गया। बदहाल स्वास्थ्य सेवाएं काफी हद तक मौतों का आंकड़ा बढ़ाने के लिए जिम्मेदार हैं। ऐसे में सवाल खड़ा हो रहा है कि हाईवे के सहारे बने उस ट्रॉमा सेंटर पर संसाधन व स्टाफ क्यों नहीं हैं, जिसे सिर्फ इसी तरह की इमरजेंसी सेवाओं के लिए बनाया गया है।

पुलिस व प्रत्यक्षदर्शी सेवादारों और सुरक्षागार्डों को मान रहे जिम्मेदार

यह बात तो साफ है कि पुलिस व प्रत्यक्षदर्शी 2 जुलाई से ही घटना के लिए लाठी–डंडे वाले सेवादारों व सुरक्षागार्डों को जिम्मेदार मान रहे हैं। अगर वे रोकटोक न करते, धक्का मुक्की न करते तो शायद इतनी बड़ी घटना न होती। जब भगदड़ मची तो सेवादार मदद के लिए भी आगे नहीं आए। इसके बाद फिर घटना को दबाने की कोशिश की। अगर आसपास के ग्रामीण न आते और पुलिस प्रशासन को न बुलाते तो बहुत देर होती। मृतक संख्या और अधिक होती। पुलिस व ग्रामीणों के आते ही यह डंडेधारी सेवादार व विशेष वर्दीधारी कमांडो व सुरक्षाकर्मी गायब हो गए।

ये रहीं लापरवाही

– 80 हजार लोगों की अनुमति के बावजूद मात्र 40 पुलिसकर्मी लगाए गए

– 50 हजार से ज्यादा की भीड़ जुटने का नहीं था एलआईयू इनपुट

– 2 इंस्पेक्टर आयोजन स्थल पर थे, जिनमें एक प्रभारी निरीक्षक भी

– 2 एंबुलेंस ही इस भीड़ को ध्यान में रखकर लगाई गई, दमकल नहीं

– 2:45 घंटे बाद घटनास्थल पर पहुंच सके थे डीएम और एसपी

– 6 बजे जाकर अधिकारियों का समन्वय हो सका था स्थापित

हाथरस हादसे में छह गिरफ्तार, मुख्य आयोजक पर इनाम घोषित

हाथरस में हुए हादसे को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मोर्चा संभालने के बाद यूपी पुलिस ने ताबड़तोड़ कार्रवाई को अंजाम देना शुरू कर दिया है। पुलिस ने गुरुवार को छह अभियुक्तों की गिरफ्तारी की है, जिनमें सत्संग आयोजन समिति से जुड़े चार पुरुष और दो महिलाएं शामिल हैं। गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों में राम लडैते यादव (मैनपुरी), मंजू यादव (हाथरस), उपेंद्र सिंह यादव (फिरोजाबाद), मंजू देवी यादव (हाथरस), मेघ सिंह (हाथरस) और मुकेश कुमार (हाथरस) शामिल हैं। ये सभी सेवादार हैं। वहीं, पुलिस ने मुख्य आयोजक देव प्रकाश मधुकर की गिरफ्तारी पर एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया है।

डान को राहतः सराफा कारोबारी पंकज महिन्द्रा अपहरण कांड में अंडरवर्ल्ड डान बबलू श्रीवास्तव और उसका भांजा बरी

प्रयागराज। पांच सितंबर 2015 की रात दुकान बंद करके कार से घर जाते समय सर्राफा व्यवसायी को अगवा किया गया था। सराफा व्यवसायी पंकज महिंद्रा की जवाहर स्क्वायर कोतवाली क्षेत्र में ज्वैलरी की दुकान थी। बदमाशों ने उनकी कार संगम स्थित बंधवा में लेटे हनुमान मंदिर के पास छोड़ दी थी। जिला अदालत में वर्ष 2015 में हुए सर्राफा कारोबारी पंकज महिंद्रा के चर्चित अपहरण कांड के आरोपी अंडरवर्ल्ड डॉन बबलू श्रीवास्तव और उसके भांजे संकल्प श्रीवास्तव बेगुनाह, बाकी आठ आरोपी दोषी करार दिए गए। यह फैसला इलाहाबाद जिला अदालत में गैंगस्टर की विशेष अदालत के न्यायधीश विनोद कुमार चौरसिया की अदालत ने शुक्रवार को सुनाया है।

गौरतलब है कि 5 सितंबर 2015 की रात दुकान बंद करके कार से घर जाते समय सर्राफा व्यवसायी को अगवा किया गया था। सराफा व्यवसायी पंकज महिंद्रा की जवाहर स्क्वायर कोतवाली क्षेत्र में ज्वैलरी की दुकान थी। बदमाशों ने उनकी कार संगम स्थित बंधवा में लेटे हनुमान मंदिर के पास छोड़ दी थी। फिरौती के रूप में 10 करोड़ रुपये मांगे गए थे। बाद में पुलिस ने फतेहपुर जिले के एक फार्म हाउस में रात को छापा मारा तो सर्राफ पंकज महिंद्रा बंधे पड़े थे।

पुलिस की कहानी के मुताबिक इस अपहरण कांड को अंडरवर्ल्ड डॉन बबलू श्रीवास्तव के इशारे पर अंजाम दिया गया था। पुलिस ने मौके पर बबलू श्रीवास्तव के भांजे संकल्प श्रीवास्तव उर्फ गोलू, गोरखपुर निवासी महेंद्र यादव, सच्चिदानंद यादव उर्फ सचिता, बरेठी थाना थरवई निवासी चंद्रमोहन उर्फ बब्लू यादव को गिरफ्तार करने का दावा किया था। साथ ही इनके पास से 9 एमएम व 32 बोर की दो पिस्टलें, 315 बोर का तमंचा, आल्टो कार, लैपटॉप, मोबाइल, फर्जी सिमकार्ड बरामदगी दिखाई थी।

बबलू श्रीवास्तव फिलहाल बरेली जेल में बंद है। इस केस के अलावा उसके खिलाफ कई मामले विचाराधीन हैं। इससे पहले अपहरण कांड के इस मामले में बबलू श्रीवास्तव को 15 अक्तूबर 2023 को बयान मुल्जिम के लिए उसे जिला अदालत में तबल किया गया था।

गुरबत की भेंट चढ़ी दो जिन्दगियां

11वीं में नहीं करा सका बेटी का दाखिला, पिता ने पुत्री को जहर देकर की खुदकुशी

मेरठ। मेरठ के दौराला थानाक्षेत्र के चिरौड़ी गांव में गुरुवार को दो जिंदगियां गुरबत की भेंट चढ़ गईं। बेटी का 11वीं में दाखिला नहीं करा पाने पर बेबस पिता ने मौत का रास्ता चुन लिया। उसने बेटी को जहरीला पदार्थ खिलाया। इसके बाद खुद भी जहर निगल लिया। हालत बिगड़ने पर पिता–पुत्री को मोदीपुरम स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के दौरान दोनों ने दम तोड़ दिया। इस हृदयविदारक घटना से क्षेत्र में मातम पसर गया। चिरौड़ी गांव निवासी जोगेंद्र प्रजापति (50) अपनी पत्नी लता के साथ भट्ठे पर मजदूरी करके परिवार पाल रहा था। जोगेंद्र के तीन बेटी खुशी (16), शीतल (13), शिवानी (10), बेटे शिवम (8) व रजत (5) हैं। बेटी खुशी ने गांव के सरस्वती शिक्षा निकेतन से 10वीं पास की थी। बताया जाता है कि खुशी अब 11वीं में दाखिला लेना चाहती थी, लेकिन पिता आर्थिक तंगी के चलते बेबस था। जोगेंद्र और उसकी पत्नी लता के साथ मजदूरी करने चले गए।

दोपहर में जोगेंद्र घर पर खाना खाने आया था। दूसरे बच्चे बाहर खेल रहे थे। घर पर खुशी ही थी। लोगों के मुताबिक, जोगेंद्र ने खुशी को जहर देकर खुद भी खा लिया। दोनों की हालत बिगड़ने लगी। इस दौरान पत्नी लता घर पहुंची तो जहर खाने की जानकारी हुई। लता के शोर मचाने पर लोग एकत्र हो गए। पिता–पुत्री को मोदीपुरम के अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां पर उपचार के दौरान दोनों की मौत हो गई। सूचना पर सीओ दौराला शुचिता सिंह और थाना प्रभारी पहुंच गए। जोगेंद्र की मौत के बाद चार बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया। अब बच्चों की पूरी जिम्मेदारी लता के कंधों पर आ गई है। लता बदहवास है। महिलाएं किसी तरह उसे दिलासा देती रही। रोते हुए लता ने कहा कि अब वह अकेले चार बच्चों को कैसे पालेगी? वहीं, जोगेंद्र और खुशी के जहरीला पदार्थ खाने की सूचना पर प्रधान नरेशपाल भी अस्पताल पहुंचे। कहा कि वह और ग्रामीण परिवार के साथ हैं। परिवार की हर संभव मदद की जाएगी।

बने हुए थे राशन कार्ड व आयुष्मान कार्ड

मृतक जोगेंद्र का व परिवार के सदस्यों का आयुष्मान कार्ड बना हुआ है। प्रधान नरेशपाल ने बताया कि जोगेंद्र का एपीएल का राशन कार्ड बना हुआ था। यूनिट के हिसाब से उसे राशन मिल रहा था।

2006 में भी पेपर लीक में आया था बेदीराम का नाम गैंगस्टर की हुई थी कार्रवाई, विधायक ने दी ये सफाई

गाजीपुर। पेपर लीक से जुड़ा वीडियो वायरल होने के बाद जखनिया से सुभासपा विधायक बेदी राम की मुश्किलें बढ़ गई हैं। पार्टी की ओर से उनसे इस बाबत जवाब भी मांगा गया है। उन्होंने दो टूक में जवाब दे दिया है कि मुझे फंसाया जा रहा है। दूसरी तरफ, वायरल वीडियो की हकीकत पता करने के लिए जिला प्रशासन कार्रवाई कर रहा है।

पेपर लीक मामले में वायरल हो रहे वीडियो के चलते जखनिया से सुभासपा विधायक बेदी राम एक बार फिर चर्चा आ गए। हालांकि इस वीडियो की हम पुष्टि नहीं करते हैं। वही, इस मामले में उनपर लगे आरोप कोई हैरान करने वाले नहीं हैं, क्योंकि पूर्व में भी इस तरह के मामलों में उनका नाम आ चुका है।

बताते हैं कि स्थिति यहां तक होती थी कि रेलवे, ग्राम विकास अधिकारी और टीईटी जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के शुरू होने के पहले ही एसटीएफ बेदीराम पर नजर रखती थी। लेकिन, नौकरशाहों और कई नामचीन नेताओं से अच्छी पकड़ बनाने वाले बेदीराम को रंगेहाथ पकड़ नहीं पाती।

चर्चाएं तो यहां तक होती रही हैं कि सरकार किसी की भी हो, चलती बेदीराम की। यही वजह रहा कि अपने संबंधों और पैसे की बदौलत बेदीराम ने पत्नी को जलालपुर (जौनपुर) से ब्लाक प्रमुख का चुनाव लड़वाया जीतवाया और खुद गाजीपुर के जखनिया से विधायक बन गए।

प्रदेश के बाहर भी होने लगी हैं चर्चाएं

जौनपुर के केराकत तहसील क्षेत्र के कुसियां निवासी बेदीराम पिछले कई वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं में सेटिंग करके परीक्षार्थियों को पास कराने के लिए जाने जाते थे। हालांकि कभी भी सीधे पैसा लेते नहीं देखे गए। 2006 में रेलवे का पेपर लीक कराने के मामले में पहली बार नाम सामने आया।

लखनऊ के कृष्ण नगर में बेदी राम पर एसओजी और एसटीएफ ने मुकदमा दर्ज कराया था। यहीं, उनपर गैंगस्टर एक्ट लगा था। एक वर्ष भी नहीं बीता था कि रेलवे का पेपर लीक कराने में गोमती नगर में एक और मुकदमा दर्ज हुआ। इसके बाद बेदीराम के नाम की चर्चाएं प्रदेश के बाहर भी होने लगी।

स्थिति यह हुई कि 2009 में ही रेलवे की परीक्षा सेटिंग कराने के मामले में नाम आया। वहां भी एसओजी और एसटीएफ ने मुकदमा दर्ज कराया गया।

वह पेपर लीक मामले में गिरफ्तार भी हो चुके हैं। इतना ही नहीं 21 अगस्त 2014 को यूपी एसटीएफ गैंगस्टेर एक्ट में बेदी राम के खिलाफ कार्रवाई भी की थी।

खुद पर लगातार सख्ती होता देख बेदीराम ने राजनीति में इंट्री योजनाबद्ध तरीके से मार ली। पहले पत्नी बदामा देवी को जलालपुर ब्लाक प्रमुख पद के चुनाव मैदान में उतार दिया। यह चुनाव भी केराकत के तत्कालीन भाजपा विधायक दिनेश चौधरी की भी प्रतिष्ठा दांव पर लगी हैं, जिनकी भयोहू इस बार चुनाव लड़ रही थी।

लेकिन, बेदीराम ने भाजपा में भी सेंधमारी करते हुए अपनी पत्नी को जीताने में कामयाब रहे। इसके बाद खुद भी विधायक बनने के लिए सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर से हाथमिलाया और गाजीपुर के जखनिया सुरक्षित सीट से जीतकर जौनपुर के लोगों को हैरान कर दिया।

वीडियो वायरल होने के पहले सीएम से की थी मुलाकात

विधायक बेदीराम पेपर लीक से जुड़े खुद का वीडियो वायरल होने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी मिले थे, जिसकी तस्वीर भी उन्होंने खूब वायरल की थी। इसी बीच उनका पेपर लीक से जुड़ा एक वीडियो वायरल हो गया।

जिसके बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव समेत विपक्षी दलों ने सवाल खड़े करने शुरू कर दिए।

उन्होंने बेदीराम के बयाने सरकार को भी घेरने की खूब कोशिश की है। वहीं, मामले को लेकर सेवानिवृत्त आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने भी बेदी राम के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

ओपी राजभर का भी वीडियो हो रहा वायरल

पेपर लीक मामले में वायरल हो रहा वीडियो जनपद के बाहर का बताया जा रहा है। वहीं, मामला तूल पकड़ने पर एक और वीडियो वायरल हो रहा है, जो सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर का है। इस वीडियो में वह यह कहते नजर आ रहे हैं कि किसी को या परिवार में किसी को नौकरी चाहिए तो फार्म भरने के बाद एडमिट लेटर या काल लेटर आ जाए तो कॉल बेदीराम को कर लेना भाई। निश्चित रूप से जुगाड़ कर दें। हालांकि इस वीडियो की हम आधिकारिक पुष्टि नहीं करते हैं।

बोले अधिकारी

एक्स पर किसी ने वीडियो शेयर किया था, जिसकी जांच के लिए मैंने एएसपी सिटी ज्ञानेंद्र से करने के लिए कहा है। हालांकि मामले हमारे यहां का नहीं हैं। – ओमवीर सिंह, एसपी

यह बोले विधायक बेदीराम

मैं दलित विधायक हूं। इस कारण विरोधी पार्टियां मुझे फंसाने में लगे हैं, आप जिस वीडियो की बात कर रहे हैं वो पुराना वीडियो है। यह वीडियो मैंने भी सोशल मीडिया पर देखा है वो फर्जी और एडिट करके चलाया जा रहा है। मैं ईमानदारी से काम कर रहा हूं।

कब-कब कहां दर्ज हुआ था मुकदमा

2006 में कृष्णा नगर लखनऊ में एसओजी और एसटीएफ ने मुकदमा दर्ज कराया
2008 में गोमती नगर लखनऊ में मुकदमा दर्ज कराया
2009 में एसओजी जयपुर राजस्थान में मुकदमा दर्ज कराया
2014 में एसटीएफ और एसओजी भोपाल मध्य प्रदेश में मुकदमा दर्ज कराया
2014 में आशियानाबाद लखनऊ में मुकदमा दर्ज कराया
2010 में मड़ियाहूं में मुकदमा दर्ज कराया
2021 में जलालपुर में मुकदमा दर्ज कराया।

सीएम योगी ने जारी किए 1056 करोड़, मेधावियों को एक लाख रुपये

टैबलेट और गोल्ड मेडल देकर किया सम्मानित

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकभवन में आयोजित कार्यक्रम में छात्रों के लिए धनराशि जारी की और उन्हें टैबलेट, एक लाख रुपये और गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को लखनऊ के लोकभवन में आयोजित मेधावी सम्मान समारोह कार्यक्रम में 88 लाख बच्चों के लिए 1056 करोड़ की राशि जारी की। यह राशि डीबीटी के माध्यम से सीधे अभिभावकों के खाते में चली गई। इसके तहत हर बच्चे को 1200 रुपये दिए गए। इस मौके पर सीएम ने मेधावियों को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने मेधावी छात्र छात्राओं को एक–एक लाख रुपये, टैबलेट और गोल्ड मेडल प्रदान किया और कहा कि खूब मेहनत से पढ़ाई करो। उन्होंने कक्षा एक, दो के बच्चों को किताबें दीं और उनके लिए चॉकलेट मंगवाने का निर्देश दिया। उन्होंने बच्चों से नाम, पते और स्कूल के बारे में पूछा और कहा कि अभी आप सभी को चॉकलेट मिलेगी। पहली बार प्रदेश में कक्षा एक और दो में एनसीईआरटी आधारित पाठ्यक्रम पर किताबों का वितरण किया गया है।

सात साल में हर विद्यालय तक योजनाओं को पहुंचाया

बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह ने कहा कि किसी भी समाज के उत्थान और सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। बिना शिक्षा के विकसित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। सरकार ने सर्व समाज को शिक्षित करने का काम किया है। पिछले सात साल में हर विद्यालय तक योजनाएं पहुंचाई हैं। परिषदीय विद्यालयों में 2017 की स्थिति में आज जमीन आसमान का अंतर आया है। 95 प्रतिशत तक सभी मूलभूत 19 पैरामीटर को पहुंचाया है। जल्द ही 100 प्रतिशत पूरा करेंगे। आज का युग तकनीक का है। इससे बच्चों को दूर नहीं रख सकते। 2.9 लाख विद्यालय को दो–दो टैबलेट दिए हैं। 880 आईसीटी लैब, 18381 परिषदीय, उच्च और कस्तूरबा विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना की है। आज 88 लाख छात्रों को पहले चरण में 1200 रुपये की राशि जारी की गई। दूसरे चरण में बचे छात्रों को भी जुलाई में यह राशि भेजेंगे।

लाखों बच्चों में टाप करना आसान नही है

माध्यमिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गुलाब देवी ने कहा कि लाखों छात्रों में टॉप करना आसान काम नहीं है। यह कामना है कि आप सभी योग्य नागरिक बनकर देश की सेवा में अपना योगदान करें। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग सफलता के नए कीर्तिमान बना रहा है। इस साल भी बोर्ड परीक्षा नकलविहीन और शुचितापूर्ण रही है। 12 दिन में परीक्षा हुई, न पेपर लीक, न कोई गड़बड़ी हुई। 280 नए राजकीय इंटर, हाईस्कूल विद्यालय आदि खोले गए। असेवित क्षेत्र में भी विद्यालय खोले। शिक्षक चयन में 6314 सहायक अध्यापक, 1890 प्रवक्ता और 230 प्रधानाचार्य नियुक्त हुए हैं। 16 राजकीय माध्यमिक विद्यालय निर्माण की प्रक्रिया चल रही है। इसमें 5 आवासीय हैं। प्रधानमंत्री के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के लिए हम सब काम कर रहे हैं। हमारे विद्यार्थी अन्य प्रदेश में भी जा रहे हैं। 50 महापुरुषों की जीवनगाथा को अनिवार्य विषय बनाया गया है। माध्यमिक विद्यालय में भी कौशल विकास के लिए प्रवीण योजना शुरू की गई है। उन्होंने मेधावियों से कहा कि बच्चों जीवन में तीन चीजें सबसे महत्वपूर्ण हैं पहला प्रभु का स्मरण, दूसरा परिश्रम और तीसरा किस्मत। परिश्रम से आपकी किस्मत बनती है। निरंतरता रखेंगे, तैयारी करेंगे तो प्रभु की आप पर कृपा बरसेगी।

प्रियंका की जन्म से अब तक की कहानी

पहले मां फिर भाई और बाद में पति की मौत, जिन्दगी में हमेशा रहा मौतों का मंजर

कानपुर। अपने तीन बच्चों की हत्या करने के बाद प्रियंका के मायके अटा बरौआ में मातम छाया रहा। पुरानी यादों में परिजन डूबे रहे। परिजन और रिश्तेदारों की जुबान पर भी इसी की चर्चा रही। औरैया जिले में सदर कोतवाली क्षेत्र के गांव ताल्हेपुर समीप सेंगुर नदी में बेरहम मां ने चचेरे देवर के साथ प्रेम–प्रसंग के चलते अपने तीन मासूम बच्चों को डुबोकर मार डाला। गुरुवार को गांव अटा बरौआ में प्रियंका के मायके पक्ष के परिजन मातम में डूबे रहे। गुरुवार को तीन बच्चों की हत्या की घटना के साथ ही पुरानी यादों में परिजन डूबे नजर आए। प्रियंका के जन्म से लेकर अभी तक के घटनाक्रम पर ध्यान गया। प्रियंका के इर्द–गिर्द मौतों का मंजर ही परिजन की बातों में सामने आया।

तीन बच्चों की हत्यारी मां प्रियंका के पिता प्रमोद कुमार उर्फ भूरे ने बताया की प्रियंका का जब जन्म हुआ था, इसके कुछ दिन बाद ही उसकी मां कमलेश कुमारी की मौत हो गई थी। एक बड़ा बेटा पवन और प्रियंका की मेहनत मजदूरी करके बेहतर परवरिश की।

इसमें छोटे भाई कन्हैयालाल और भाभी गीता देवी का भी बहुत योगदान रहा। वह मजदूरी करने जाते थे। बच्चों की देखरेख भाभी और भतीजी करती थी। प्रियंका पढ़ाई में भी बहुत होशियार थी। इसको लेकर उसे देवरपुर गांव के कॉलेज के इंटर तक पढ़ाया भी।

जिसके बाद 10 साल पहले अच्छा घर देखकर उसकी शादी कर दी। उसकी शादी के 15 दिन बाद ही बेटे पवन की अचानक हालत बिगड़ी और उसकी मौत हो गई। वहीं शादी को 10 साल भी नहीं बीते और पति अवनीश की करंट की चपेट में आने से मौत हो गई।

डेढ़ साल बाद प्रियंका बच्चों के साथ घर बरौआ आकर रहने लगी। नातियों के साथ उनका भी मन लगा रहता था। वहीं छोटे भाई की बेटियां प्रीति, वर्षा और ज्योति और बेटा अनमोल भी प्रियंका और उसके बच्चों का पूरा ख्याल रखते थे। खाने पीने की भी कोई दिक्कत नहीं थी। घर के बाहरी कमरे में वह बच्चों के साथ रह रही थी, लेकिन इसके बावजूद भी घर वालों से रोजाना लड़ना–झगड़ना उसकी आदत बन गई थी। समझाने पर सभी को अपना दुश्मन मानती थी। प्रियंका मर जाती तो आंसू भी नहीं निकलते, लेकिन उसने तीन मासूमों को मार डाला। यह कहते हुए भूरे दहाड़ मारकर रो पड़े।

हाथरस में भोले बाबा के सत्संग में 'मौत की भगदड़' के बाद का मंजर

हादसे के बाद घायलों को अस्पताल ले जाती एम्बुलेंस

अस्पताल में घायलों का उपचार करते चिकित्सक

अस्पताल के बाहर लगी घायलों के परिजनों की भीड़

अपनों को खोने के गम में विलाप करतीं महिलाएं

बस यही निशान बाकी हैं

हाथरस हादसा कब और कैसे हुआ

अलीगढ़। पुलिस व प्रत्यक्षदर्शी 2 जुलाई से ही घटना के लिए लाठी–डंडे वाले सेवादारों व सुरक्षागार्डों को जिम्मेदार मान रहे हैं। अगर वे रोकटोक न करते, धक्का मुक्की न करते तो शायद इतनी बड़ी घटना न होती। हाथरस के सिकंदराराऊ के फुलरई मुगलगढ़ी गांव में 2 जुलाई, मंगलवार के दिन जो अमंगल हुआ शायद ही उसे कभी भुलाया जा सके। भगदड़ में 121 लोगों की जान गई, जिनमें ज्यादातर महिलाएं हैं। कई लोग घायल हो गए। घटना के बाद लोगों में दर्द है तो आयोजकों की लापरवाही पर गुस्सा भी। जिस आयोजन के लिए 80 हजार लोगों की अनुमति ली गई, वहां पर 2.50 लाख से अधिक लोग आ गए थे। यह हादसा कब और कैसे हुआ? इस हादसे के पीछे कौन गुनहगार हैं? अब तक पुलिस कार्यवाई कहां तक पहुंची है? आइए जानते हैं इन सवालों के जवाब।

2 जुला , 12 बजे दोपहर: सत्संग शुरू

मंगलवार को हाथरस के सिकंदराराऊ के फुलरई मुगलगढ़ी गांव में 2 जुलाई, मंगलवार को साकार विश्वहरि बाबा उर्फ भोले बाबा का सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में 80 हजार लोगों की अनुमति के बावजूद करीब 2.50 लाख से अधिक लोग आ गए।

12.30 बजे दोपहर: साकार नारायण हरि बाबा पंडाल में पहुंचे

दोपहर 12.30 बजे साकार हरि बाबा पंडाल में पहुंचे और उनके पहुंचे ही भीड़ उत्साहित हो उठी। बाबा की प्राइवेट आर्मी ट्रैफिक व्यवस्था से लेकर, पानी और दूसरे इंतजाम देख रही थी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सत्संग में लोगों को मोबाइल निकालने तक की अनुमति नहीं थी। जो भी व्यक्ति वीडियो बना रहा था, उस पर बाबा की प्राइवेट आर्मी लाठी बरसा रही थी।

12.45 बजे दोपहर: एक घंटे तक बाबा के प्रवचन हुए

हजारों की भीड़ होने के बावजूद बाबा ने करीब एक घंटे ही कार्यक्रम को दिए। जबकि भीड़ सुबह से ही बाबा की झलक पाने को बेताब थी। स्थानीय लोग भी यही सवाल उठा रहे हैं कि अगर बाबा कार्यक्रम को दो से चार घंटे का समय देते तो यह हादसा न होता। क्योंकि तब लोग आते–जाते रहते और एक साथ भीड़ के निकलने की नौबत नहीं आती।

1.47 बजे दोपहर: आरती हु

1.47 बजे आरती शुरू हुई। आरती शुरू होते ही बाबा के अनुयायियों में गहमागहमी मच गई। अगर उस समय ही हालात को देखते हुए सही कदम उठा लिया जाता तो शायद इतने लोग काल के गाल में न समाते।

02 बजे दोपहर: बाबा ने सत्संग समाप्ति की घोषणा की

बताया जाता है कि बाबा के सत्संग समाप्ति की घोषणा के साथ ही बाबा की प्राइवेट आर्मी ने कार्यक्रम स्थल की सारी व्यवस्था को पूरी तरह से अपने कब्जे में ले लिया। लेकिन भीड़ को संभालने के लिए न ही बाबा की निजी आर्मी और न ही पुलिसकर्मी पर्याप्त थे।

2 बजे से 2.30 बजे दोपहर: बाबा का काफिला निकला

सीनीय लोगों के अनुसार, जब बाबा का काफिला निकला तब भीड़ को रोक दिया गया। इस दौरान चरणों की रज लेने के चक्कर में अनुयायी अनियंत्रित हो गए। भगदड़ के दौरान लोग मरते रहे और बाबा के कारिंदे गाड़ियों से भागते रहे। किसी ने भी रुककर हालात को जानने की कोशिश नहीं की।

125 सीसी सीएनजी मोटरसाइकिल भारत में लान्च

नई दिल्ली । बजाज ऑटो ने शुक्रवार को भारतीय बाजार में बहुप्रतीक्षित फ्रीडम सीएनजी मोटरसाइकिल लॉन्च करने का एलान किया। पल्सर बनाने वाली कंपनी का यह नया क्रांतिकारी उत्पाद दुनिया की पहली मोटरसाइकिल है जिसे कंपनी द्वारा लगाई गई सीएनजी पावरट्रेन मिलती है।

बजाज ऑटो ने भारतीय बाजार में बहुप्रतीक्षित थतममकवउ ब्छळ ङवजवतबलबसम (फ्रीडम सीएनजी मोटरसाइकिल) लॉन्च करने का एलान किया। फ्रीडम 125 दुनिया की पहली ब्छळ–पावर्ड मोटरसाइकिल है। नई 125 सीसी कम्यूटर पेट्रोल और सीएनजी पर चलती है। सीएनजी से लैस कार की तरह, और डुअल–फ्यूल सेटअप का मकसद उसी सेगमेंट में अन्य कम्यूटर की तुलना में चलाने की लागत को काफी कम करना है। बजाज फ्रीडम 125 की एक्स–शोरूम कीमत 95,000 रुपये से शुरू होती है। इस नई पेशकश के लिए बुकिंग शुक्रवार को लॉन्चिंग के साथ ही शुरू हो गई है।

ज्यादा माइलेज की चाहत वालों के लिए है यह बाइक

पल्सर बनाने वाली कंपनी का यह नया क्रांतिकारी उत्पाद दुनिया की पहली मोटरसाइकिल है जिसे कंपनी द्वारा लगाई गई सीएनजी पावरट्रेन मिलती है। इस मोटरसाइकिल को भारत के रोजमर्रा के यात्रियों के लिए डिजाइन किया गया है और

इसका लक्ष्य इस बड़े बाजार की जरूरतों को पूरा करना है, जो सालाना भारी बिक्री लाता है। फिलहाल, कोई भी उत्पाद नहीं है जो नई फ्रीडम सीएनजी बाइक को टक्कर दे सके। हालांकि यह बाइक उन्हीं ग्राहकों को लक्षित करती है, जिन्हें ज्यादा माइलेज देने के लिए मशहूर बजाज प्लेटिना, हीरो स्प्लेंडर या होंडा सीबी शाइन जैसी बाइक पसंद आती है।

बजाज ऑटो के एमडी राजीव बजाज ने नई मोटरसाइकिल के बारे में बताते हुए कहा कि यह बाइक दुनिया की पहली "सीएनजी–हाइब्रिड" टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करती है। उन्होंने आश्वासन दिया कि नए सीएनजी उत्पाद की बात करें तो कंपनी ग्राहकों का पूरा ख्याल रखेगी। राजीव बजाज ने अपने इस लेटेस्ट उत्पाद का डिटेल्स साझा करते हुए मजाक में कहा, "इसको हमारी बजाज की गारंटी है सर।"

बजाज फ्रीडम 125 – डुअल फ्यूल टैंक

बजाज फ्रीडम 125 सीएनजी मोटरसाइकिल एक छोटे पेट्रोल ईंधन टैंक के साथ खपत को लगभग 50 प्रतिशत कम करने का वादा करती है। हैंडलबार के दाईं ओर एक स्विच दिया गया है, जिससे आप दोनों ईंधन विकल्पों के बीच स्विच कर सकते हैं। सीएनजी सिलेंडर को पेट्रोल टैंक के नीचे रखा गया है। लुक की बात करें तो फ्रीडम 125 अपने प्रतिद्वंदियों से अलग दिखने वाली कोई बड़ी बात नहीं है। हालांकि, सीएनजी और पेट्रोल टैंकों के लिए फिलर नोजल अलग–अलग होते हैं। जिनमें से सीएनजी के लिए एक प्रेशराइज्ड स्टोरेज सेटअप और पारंपरिक पेट्रोल टैंक के लिए एक अलग मैकेनिज्म है। पेट्रोल की टंकी की क्षमता 2 लीटर है जबकि सीएनजी की टंकी की क्षमता 2 किलोग्राम है।

बजाज फ्रीडम 125 – माइलेज

बजाज का दावा है कि फ्रीडम 125 सिर्फ सीएनजी पर 213 किमी तक चल सकती है। जबकि पेट्रोल टैंक पर 117 किमी चल सकती है। कुल मिलाकर यह बाइक 330 किमी की रेंज का वादा करती है।

बजाज फ्रीडम 125 – स्पेसिफिकेशंस

बाइक में फ्यूल इंजेक्शन के साथ 125 सीसी सिंगल–सिलेंडर, एयर–कूल्ड इंजन है। यह इंजन 9.4 ईच का पावर और 9.7 छउ का पीक टॉर्क जेनरेट करता है। इसे ग–स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। अन्य हार्डवेयर कंपोनेंट्स में सामने की तरफ टेलिस्कोपिक फोर्क्स और पीछे की तरफ मोनोशॉक शामिल हैं। ब्रेकिंग परफॉर्मेंस के लिए फ्रंट में डिस्क ब्रेक और रियर में ड्रम ब्रेक सेटअप दिया गया है। बाइक 17 इंच के अलॉय व्हील्स पर चलती है।

लुक और डिजाइन

नई बजाज फ्रीडम 125 की स्टाइलिंग ज्यादा सरल और मॉडर्न–रेट्रो है। बाइक में क्त्स् के साथ राउंड हेडलैंप मिलता है। फ्लैट सीट, चौड़ा हैंडलबार और सेंटर–सेट फुट पेग इसे एक न्यूट्रल राइडिंग पोजिशन देते हैं। बाइक में सीएनजी लो–लेवल अलर्ट और न्यूट्रल गियर इंडिकेटर सहित कई टेल इंडिकेटर्स के साथ एक सेमी–डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल भी मिलता है।

बुलकग डिटेल्स

कंपनी ने अपने आधिकारिक डीलरशिप के साथ–साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर नए मॉडल के लिए बुकिंग शुरू कर दी है।

वैरिएंट्स और कीमत

फ्रीडम सीएनजी 125 बाइक को तीन वैरिएंट्स में उपलब्ध कराया जाएगा। जिसमें ड्रम, ड्रम एलईडी और डिस्क एलईडी शामिल हैं। ड्रम वैरिएंट की कीमत 95,000 रुपये रखी गई है, जबकि मिडिल ड्रम एलईडी वैरिएंट की कीमत 1.05 लाख रुपये है। वहीं, टॉप–स्पेक डिस्क एलईडी वैरिएंट की कीमत 1.10 लाख रुपये है। तीनों कीमतें एक्स–शोरूम हैं।

मुकाबला

बजाज फ्रीडम 125 का सीधा प्रतिद्वंदी तो नहीं है। लेकिन यह 125 सीसी सेगमेंट में होंडा शाइन 125, हीरो ग्लैमर, बजाज रेडर 125, हीरो एक्सट्रीम 125 R जैसी मोटरसाइकिलों को टक्कर देगी।

बॉलीवुड एक्ट्रेसेस से आगे निकली साउथ की ये एक्ट्रेस, जिन्होंने PM Modi को दिया शादी का न्यौता

दिल्ली। ना सिर्फ बॉलीवुड बल्कि साउथ की हसीनाएं भी लाइमलाइट में आने का कोई मौका नहीं छोड़ती। जी हां, अब भई साउथ एक्ट्रेस वरलक्ष्मी सरथकुमार ने कुछ ऐसा ही किया है, जिससे वो चर्चा में आ गई हैं। सोशल मीडिया पर वरलक्ष्मी सरथकुमार को लेकर खूब चर्चा हो रही है। साथ ही सभी ये जानना चाहते हैं कि आखिर उन्होंने ऐसा क्या किया है? इसके अलावा ये सवाल भी लोगों के मन में है कि आखिर ये साउथ एक्ट्रेस हैं कौन? तो आइए आपको बताते हैं३

वरलक्ष्मी सरथकुमार ने ऐसा क्या किया, जो हो रही चर्चा?

साउथ एक्ट्रेस वरलक्ष्मी सरथकुमार जल्दी ही शादी करने वाली हैं। अपनी शादी को लेकर एक्ट्रेस सुर्खियों में भी हैं। वरलक्ष्मी ने अपनी शादी में आने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी न्यौता दिया है। एक्ट्रेस ने पर्सनली अपने मंगेतर निकोलस सचदेव संग पीएम मोदी को शादी में आने का आग्रह किया है। वरलक्ष्मी ने इसकी फोटोज भी अपने सोशल मीडिया पर शेयर की हैं, जो अब वायरल हो रही हैं।

कौन हैं साउथ एक्ट्रेस वरलक्ष्मी?

अभिनेत्री वरलक्ष्मी सरथकुमार की बात करें तो वो अभिनेता आर सरथकुमार की बेटी हैं। जी हां, वही अभिनेता आर सरथकुमार, जो अब राजनीति में सक्रिय हैं। वरलक्ष्मी सरथकुमार तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम फिल्मों में अपना जलवा दिखाती हैं। उन्होंने साल 2012 में तमिल फिल्म पोडा पोडी से अपने करियर की शुरुआत की थी। बता दें कि 2 मार्च 2024 को, वरलक्ष्मी सरथकुमार की सगाई निकोलाई सचदेव से हुई थी। निकोलाई सचदेव मुंबई में रहने वाले एक गैलरिस्ट हैं।

अभी शादी नहीं करेंगे जैस्मिन और अली

एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री जैस्मिन भसीन ने अपनी और अली गोनी की शादी को लेकर खुलासा किया है। अभिनेत्री ने कहा कि अभी उन्होंने शादी को लेकर कोई योजना नहीं बनाई है। उन्होंने आगे कहा कि फिलहाल दोनों अपने काम पर ध्यान दे रहे हैं। जैस्मिन भसीन और अली गोनी टीवी की सबसे प्यारी जोड़ियों में से एक हैं। वह काफी समय से एक दूसरे के साथ हैं। दोनों से अक्सर उनकी शादी के बारे में सवाल पूछे जाते हैं और तरह–तरह की अटकलें लगाई जाती हैं। अब अभिनेत्री जैस्मिन भसीन ने अपनी शादी को लेकर संकेत दिए हैं। उन्होंने कहा है कि वे जल्दी शादी के बंधन में नहीं बंध सकते हैं। दरअसल, हाल ही में एक साक्षात्कार के दौरान जब उनसे उनकी शादी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि जब मन करेगा तब वो ऐसा करेंगे। उन्होंने यह भी साझा कि फिलहाल दोनों अपने–अपने काम में व्यस्त हैं।

जब मन करेगा तब शादी करेंगी जैस्मिन

रिपोर्ट्स के मुताबिक साक्षात्कार के दौरान जैस्मिन ने कहा कि शादी को लेकर उन दोनों ने अभी कोई योजना नहीं बनाई है। उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी बैठकर ये योजना नहीं बनाई की वो इसे कल या परसो कर ले। अभिनेत्री ने आगे कहा कि जब उनका मन करेगा तब शादी कर लेंगी।

काम है पहली प्राथमिकता

अभिनेत्री ने बातचीत के दौरान साझा किया, 'हम दोनों छोटे शहरों से संघर्ष करके आए हैं, हम अपने सपनों के साथ यहां आए हैं, हमारा ध्यान उन सपनों पर हैं। इसलिए, एक बार जब हम उस मुकाम पर पहुंच जाएंगे, जहां हम एक–दूसरे के साथ उस खुशी को साझा करने के लिए अंदर से भी संतुष्ट और खुश होंगे।'

जैस्मिन भसीन का वर्क फ्रंट

जैस्मिन भसीन के वर्क फ्रंट की बात करें तो वह 'दिल से दिल तक', 'दिल तो हैप्पी है जी' और 'नागिन 4' जैसे सफल और मशहूर टीवी शो में काम कर चुकी हैं। जैस्मिन बिग बॉस के अलावा रियलीटी शो 'फियर फैक्टरः खतरों के खिलाड़ी' का भी हिस्सा रह चुकी हैं। अभिनेत्री ने साल 2022 में पंजाबी फिलम 'हनीमून' से डेब्यू किया है। उनके आगामी कार्य की बात करें तो वह जल्दी ही फिल्म 'अरदास सरबत दे भले दी' में नजरा आएंगी।

मुम्बईः चैम्पियन के स्वागत में

उमड़ा जनसैलाब

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।